प्रो. नागेश दुबे

पर्यटन के विविध आयाम

(Proceedings of the Seminar)

संरक्षक

डॉ. आनंद तिवारी

प्रधान संपादक

डॉ. नवीन गिडियन

संपादक

डॉ. अंजना नेमा

डॉ. मोनिका हर्डीकर

पर्यटन के विविध आयाम

डॉ. नवीन गिडियन

प्रधान संपादक

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२४

ISBN 978-81-974498-1-9

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ४५० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

अनुक्रमणिका

प्राचार्य की कलम से 05

सम्पादक की कलम से 06

हिन्दी खण्ड

1. छत्तीसगढ़ में पर्यटन की संभावनायें 13
   डॉ. सीमा पान्डेय
2. आबचंद (जिला-सागर) के चित्रित शैलाश्रय : एक प्रमुख पर्यटन केन्द्र 24
   डॉ. नागेश दुबे
3. पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं का योगदान 35
   डॉ. रेनूबाला शर्मा
4. ऐतिहासिक पर्यटन स्थल मण्डला (प्राचीन रामनगर) 39
   डॉ. वन्दना गुप्ता
5. सागर के ऐतिहासिक पर्यटन स्थल : संरक्षण एवं संवर्द्धन 45
   डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव
6. ग्रामीण पर्यटन-मध्यप्रदेश के ग्रामीण पर्यटन स्थलों के विशेष संदर्भ में 57
   डॉ. संजय खरे
7. स्वतंत्र्योत्तरभारत में पर्यटन की स्थिति : एक विश्लेषण 64
   डॉ. भावना यादव
8. बढ़ती जनसंख्या और विरूपित होता पर्यावरण : मध्यप्रदेश का एक दृष्टांत 71
   डॉ. पवन तिवारी

2
आबचंद (जिला-सागर) के चित्रित शैलाश्रय : एक प्रमुख पर्यटन केन्द्र

डॉ. नागेश दुबे
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सागर से लगभग ३५ कि.मी. दूर सागर-गढ़ाकोटा मार्ग पर मुख्य मार्ग से लगभग ३ कि.मी. दूर घने जंगलों में सुनार नदी की सहायक नदी गधेरी नदी के किनारे आबचंद नामक गाँव है। वहाँ लगभग एक दर्जन से अधिक शैलाश्रय हैं। इनका क्रम ग्राम के किनारे से आरम्भ होकर लगभग ५ कि.मी. क्षेत्र तक फैला हुआ है। आबचंद में जिन शैलचित्रों का पता अब तक लगा है, वे छोटे-बड़े शैलाश्रयों में चित्रित हैं। सबसे बड़े शैलाश्रय (ढबुआ घाट) लगभग चालीस फुट (४०) लम्बा है। इसकी दीवारों पर दो दर्जन से अधिक चित्र देखने को मिलते हैं। अन्य शैलाश्रय इससे छोटे हैं। जिन रंगों का प्रयोग इन शैलाश्रयों में किया गया है, उनमें मुख्य तीन हैं-(१) मटमैला लाल, (२) पीला और (३) सफेद। यत्र-तत्र काला रंग भी मिलता है। कुछ स्थानों पर प्राचीन शैलचित्र के ऊपर बाद में बनाया गया दूसरा चित्र भी मिलता है। कई गुफाओं में दीवारों पर खुदे हुए रेखांकन भी मिले हैं। कई शैलाश्रयों की भित्तियों को पहले लाल या सफेद रंग से रंगकर उस पृष्ठभूमि पर चित्र उकेरे गए हैं। चित्रों के विषय मुख्यतः नृत्य, आखेट, युद्ध आदि से संबंधित हैं। आयुधों में धनुष-बाण, खड्ग, ढाल, तलवार तथा भाला का चित्रण है। जीव-जन्तुओं में मृग, सिंह, श्वान, अश्व, हाथी, बारहसिंगा एवं मयूर आदि का अंकन है।

आबचंद के शैलाश्रयों में सबसे प्राचीन चित्र गहरे कत्थई रंग के हैं। द्वितीय स्थान गेरुए रंग के चित्रों का है। तृतीय स्थान सफेद रंग के बने चित्रों का है। बाद में सफेद एवं लाल रंग का संयोजन मिलता है। शैलचित्रों की प्राचीनता, विविध विषय, चित्रण, कलात्मकता तथा विपुल संख्या में शैलचित्रों की उपलब्धि की दृष्टि से आबचंद सागर जिले का महत्वपूर्ण स्थल है। सागर

विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष प्रो. के.डी. बाजपेयी के निर्देशन में आबचंद क्षेत्र का सर्वेक्षण १९५५ में किया गया। यहाँ का एक शैलाश्रय अब मंदिर के रूप में परिवर्तित हो गया है।"जिसके कारण जिस शैलाश्रय में मंदिर बना दिया गया है। उसके शैलचित्र विलुप्त कर दिये गये हैं।

आबचंद की चित्रित गुफाओं को निम्न क्षेत्रों में विभाजित किया गया है -

(१) मंदिर समूह के शैलाश्रयों के शैलचित्र

मंदिर समूह के शैलाश्रयों को छः भागों में विभाजित किया जा सकता है-

शैलाश्रय क्रमांक-१ एवं २ के चित्र सफेद रंग में चित्रित हैं। इनमें अधिकांश चित्र पशुओं के हैं।

शैलगृह क्रमांक-३ में दो चित्र हैं। प्रथम चित्र में कत्थई रंग से ज्यामितीय शैली में सात मानवों का पंक्तिबद्ध अंकन है। द्वितीय चित्र में गेरूए और लाल रंग से मानव आकृति बनी हुई है।

शैलाश्रय क्रमांक-४ में दो मुख्य चित्र हैं। पहले चित्र में लाल रंग का उपयोग किया गया है। एक श्वान के चित्रण के बाद एक पंक्ति में तरकश सहित पांच धनुर्धरों का अंकन है। द्वितीय चित्र में अश्वारूढ़ योद्धा के पीछे खड्ग तथा ढाल लिए पदाति मानव चित्रित हैं।

शैलाश्रय क्रमांक-५ में तीन मुख्य चित्र हैं- पहले में हिरणों तथा बारहसिंगों का पंक्तिबद्ध अंकन है। द्वितीय चित्र में स्त्री-पुरुष का अंकन है।

शैलाश्रय क्रमांक-६ में प्रागैतिहासिक शैलचित्रों की संख्या सबसे अधिक है। ये चित्र कत्थई गहरे रंग से बनाये गये हैं। जिन पर चूने की परत चढ़ गई। इनमें मानव व पशु दोनों का अंकन किया गया है। मानव ६ आकृतियाँ यष्टि आकार की है। पशुओं में अरनाभैसा, हिरणों की आकृतियाँ अधिक है।

इसके अतिरिक्त इस शैलाश्रय में अश्वारोही योद्धा, महिष, गज, मृग, मयूर तथा सारस पक्षी आदि चित्रित हैं।

(२) भदभदा समूह के शैलाश्रय

भदभदा क्षेत्र में मुख्य दो शैलाश्रय हैं। इनमें दो दंडधारी मनुष्य और मृग एवं वन्य पशुओं के चित्र चित्रित हैं।

(३) रपटा घाट समूह के शैलाश्रय

रपटा घाट के शैलाश्रय दो भागों में विभक्त हैं। पहले समूह में नृत्यमुद्रा में मानव, अस्त्रधारी, योद्धा, नृत्यरत समूह, अश्वारूढ़ योद्धा, खड्ग तथा ढाल पकड़े हुए पदाति योद्धा, गजारूढ़ व्यक्ति आदि का अंकन

है।[11] द्वितीय समूह में श्वान, सिंह, धनु, अश्वारोही, योद्धा युद्ध हेतु प्रस्थान दृश्य तथा नृत्य दृश्य आदि का अंकन है।

(४) ढबुआ घाटका शैलाश्रय

यह शैलाश्रय आकार एवं चित्रों की दृष्टि से इस क्षेत्र का सबसे बड़ा शैलाश्रय है। भीमकाय शिलाओं के गिरने के कारण यह तीन भागों में विभक्त हो गया है। मध्य में गज, अश्व एवं मृग का अंकन है। यहीं पर एक वृक्ष के चारों ओर नक्षत्र, सूर्य तथा चन्द्र का अंकन है। युद्ध दृश्य, घायल योद्धा, खड्ग तथा ढाल सहित योद्धा, धनुष बाण लिए योद्धा, गजारूढ़ व्यक्ति, अश्वारूढ़ योद्धा, गाय, मयूर, आदि का अंकन है। इसी दृश्य समूह में भैंस को रस्सी से बाँधकर खींचता हुआ व्यक्ति का चित्र भी महत्वपूर्ण है।

(५) इमलीकरार क्षेत्र का शैलाश्रय

इमलीकरार में चित्रों की संख्या अधिक नहीं है। अधिकांश चित्रों में पूरक तथा रेखांकन शैली में मानव, सिंह, अश्व तथा योद्धा के चित्र हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य छोटे-छोटे शैलाश्रय हैं। जिनमें शैलचित्र मिलते हैं।

आबचंद क्षेत्र के शैलचित्रों की शैली, विषयवस्तु में प्रतिबिम्बित लोकसंस्कृति

आबचंद की चित्रित गुफाओं का अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि यहाँ के चित्र प्राचीनता, विविधता, कलात्मकता तथा विपुलता में अद्वितीय हैं। यहाँ के अज्ञात चितेरों द्वारा बनाये गये चित्रों द्वारा प्राचीन लोक संस्कृति तथा उनकी कला का परिचय मिलता है। इन शैलाश्रयों में रेखांकन शैली, क्षेपांकन शैली तथा पूरक शैली में अधिकांश चित्रों को चित्रित किया गया है। चित्रण में लाल, गेरूआ, कत्थई, सफेद, हरा, पीला तथा काले रंग का प्रयोग किया गया है।

यहाँ के चित्रों में आखेट दृश्य, पशु-पक्षी तथा अन्य जीव जन्तु, विविध योद्धा, अश्वारोही, गजारोही युद्ध-दृश्य, पारिवारिक दृश्य, नृत्य, प्रकृति चित्रण, प्रतीक अंकन, पशुपालन, आदि का अंकन मिलता है।

इन चित्रों के विषय बड़े ही मनोरंजक हैं। इन शैलाश्रयों में निवास करने वाले लोगों की लोकसंस्कृति, जीवन-चर्या तथा रुचि का पता चलता है। मुख्यतः जो दृश्य इन चित्रों में मिलते हैं, वे है- शिकार, जानवरों की सवारी, युद्ध, नृत्य, संगीत तथा घरेलू जीवन संबंधी दृश्य जीवन निर्वाह का मुख्य साधन आखेट होने के कारण शिकार के दृश्य अधिक मिलते हैं। जिन जानवरों का

शिकार किया जाता था, वे हिरण, शूकर, गाय-बैल, भैंसे, बाघ आदि थे। ये जानवर इन चित्रों में विशेष रूप से मिलते हैं। इनके अतिरिक्त कुत्ता, बकरी, घोड़ा, हाथी भी मिले हैं।घोड़ों तथा हाथियों पर सवारी करते हुए लोग दिखाए गए हैं। एक स्थान पर मोर के ऊपर सवारी का भी चित्रण है। अन्य चित्र में मोर का शिकार दिखाया गया है। शिकार तथा रक्षा के लिए जिन आयुधों का प्रयोग होता था, उनमें तलवार, भाला, धनुष बाण, चक्र तथा ढाल मुख्य हैं। युद्ध करते हुए लोगों को एक हाथ में मूठदार तलवार तथा दूसरे में ढाल लिए हुए प्रदर्शित किया गया है। युद्ध के कुछ ऐसे दृश्य भी मिले हैं जिनमें घोड़ों पर सवार सरदार लोग अपने सिर के ऊपर छत्र लगाए हुए जा रहे हैं। उनके आगे-पीछे अन्य लोग हाथों में तलवार आदि आयुध लिए हुए पैदल चल रहे हैं। कुछ चित्रों में हाथी पर सवार लोग दिखाए गए हैं। बाघों के चित्र भी बड़ी संख्या में यहाँ मिलते हैं। एक स्थान पर चार भयंकर बाघ खड़े हुए दिखाए गए हैं, इनके बीच में एक पुरुष खड़ा है। दो बाघ की आपस में लड़ाई भी कई स्थानों पर चित्रित है। आबचंद के इस घने जंगल में आज भी बाघ मिलते हैं। एक चित्र में दो हाथियों का भी युद्ध दिखाया गया है।

कई गुफाओं में एक पंक्ति में खड़े हुए सात हिरन चित्रित किए गये हैं। एक स्थान पर एक व्यक्ति बैल को रस्सी से खींचता हुआ दिखाया गया है। दूसरे चित्र में लम्बी सींग वाले अरना (आरण्यक) भैंसे बने हैं। एक भैंसे को लाठी लिए हुए आदमी खींच रहा है।

आबचंद में आंचलिक लोकसंस्कृति से सम्बन्धितअमोद-प्रमोद तथा घरेलू जीवन संबंधी विविध दृश्य इन चित्रों में मिलते हैं। लोगों में नृत्य और संगीत का शौक अधिक प्रतीत होता है। चित्रों में कई पुरुष या स्त्रियाँ एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए नृत्य के भाव में खड़ी दिखाई गई है। एक स्थान पर नृत्य मुद्रा में सात स्त्रियों का आलेखन है। सात की संख्या का इन चित्रकारों के लिए विशेष महत्व जान पड़ता है। वाद्य-यन्त्रों में बड़ी ढोलकें और बाँसुरी मिली हैं एक चित्र में बड़ी ढोलक लिए हुए तथा दाहिने हाथ में बजाने की लकड़ी पकड़े एक स्त्री दिखाई गई है। दूसरे स्थान पर तीन ढोल बजाने वाले चित्रित है। इसी प्रकार बाँसुरी बजाने वाले भी इन चित्रों में मिलते हैं।

एक शैलाश्रय में नौका-जैसा चित्र पाया गया है। नौका निर्माण की कला भारत में बहुत पुरानी है। सिन्धु घाटी के उत्खनन से एक मुद्रा प्राप्त हुई थी, जिसमें नौका का चित्र था। हाल में गुजरात में लोथल नामक स्थान

की खुदाई से ऐसी ही एक नौका की आकृति प्राप्त हुई है। सम्भव है कि इन शैलाश्रयों में रहने वाले लोग भी नदी में चलने के लिए नौका का निर्माण और उसका प्रयोग करते रहे हों।

उक्त चित्रों में कहीं-कहीं पुरुषों एवं स्त्रियों की कमर के नीचे का भाग आच्छादित मिलता है। कुछ पुरुष सिर के ऊपर ऊंची नुकीली टोपी लगाये हुए दिखाए गये हैं। स्त्रियों के जूड़े लम्बे हैं। उन्हें सिर के पीछे दिखाया गया है। एक चित्र में कंघी के आकार की वस्तु बनी है, जिससे सम्भवतः बालों को संवारने का काम किया जाता था।

इन चित्रों से मध्यप्रदेश के इस भाग में निवास करने वाले शैलाश्रयवासियों की लोकसंस्कृति की झांकी मिलती है। अब प्रश्न यह है कि इन शैलचित्रों का समय क्या होगा ? इस संबंध में अभी निश्चित रूप से कुछ कहना संभव नहीं। गार्डन आदि कुछ लेखकों ने मध्यप्रदेश के अन्य ज्ञात चित्रों के संबंध में लिखा है। उन्होंने शैली तथा वर्ण्य विषय के आधार पर उन चित्रों का वर्गीकरण किया है। उनके अनुसार प्राचीनतम शैल चित्र ई. पूर्व ७०० से पहले के नहीं हैं तथा अन्तिम अवस्था के शैलचित्रों का निर्माण ई. १०वीं शती ई. में हुआ होगा। डॉ. श्याम कुमार पाण्डेय आबचंद के चित्रित शैलाश्रयों को मध्य प्रस्तर युग से ऐतिहासिक युग के बीच चित्रित मानते हैं।[iv] मध्यप्रदेश तथा आसपास के भू-भागों में जो अनेक शैलचित्र उपलब्ध हैं, उनकी सम्यक् जाँच-पड़ताल की आवश्यकता है। पुरातत्त्व एवं प्राचीन साहित्य में इस संबंध में जो सामग्री उपलब्ध है, उसके साथ इन शैलचित्रों का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। तभी इन गुफा चित्रों के समय का कुछ सही अंदाजा लग सकता है।

आबचंद के शैलचित्रों में प्रतिबिम्बित लोकसंस्कृति के विविध पक्ष

आबचंद क्षेत्र के शैलचित्रों में तत्कालीन लोक संस्कृति के विविध पक्षों को प्रदर्शित किया गया है। मुख्यतया जो दृश्य चित्रित शैलाश्रयों में अंकित है, ये हैं शिकार, जानवरों की सवारी, युद्ध, नृत्य संगीत तथा मानव जीवन से सम्बन्धित अन्य दृश्य इनका संक्षिप्त विवेचन निम्नांकित है-

शैलाश्रयों में निवास करने वाले मानवों के जीवन निर्वाह का मुख्य साधन आखेट होने से शिकार के दृश्य अधिक मिले हैं। जिन जानवरों का शिकार किया जाता वे हिरण, सुअर, गाय, बैल, भैंसा, बाघ आदि थे। ये जानवर इन चित्रों में विशेष रूप से मिले हैं। इनके अतिरिक्त कुत्ता, बकरी,

हाथी तथा घोड़ा भी निर्मित हुए हैं। शिकार तथा रक्षा के लिए जिन आयुधों का प्रयोग होता था, उनमें तलवार, भाला, धनुष-बाण, चक्र तथा ढाल मुख्य हैं। शिकार करते हुए मानव समूहों को चित्रित किया गया है।

सागर क्षेत्र के प्राचीनतम चित्रित शैलाश्रय आबचंद में हैं। यहाँ के चित्रित शैलाश्रयों में शिकारी अथवा शिकारियों का समूह चित्रित है। वे धनुष-बाण, बरछा तथा अन्य हथियारों से सज्जित है। शिकार दृश्यों में अनका, भैंसा, बैल डरिक, शेर और जंगली सुअर आदि पशु चित्रित हैं। [v]

आंचलिक लोक संस्कृति से सम्बन्धित

आमोद-प्रमोद सम्बन्धी विविध दृश्य आबचंद के शैलचित्रों में दृष्टिगत हैं। तत्कालीन मानवों में नृत्य और संगीत का शौक अधिक रहा होगा ऐसा प्रतीत होता है। आबचंद क्षेत्र के चित्रित शैलाश्रयों में उत्सव तथा नृत्य-संगीत दृश्य चित्रित हुए हैं। आबचंद के शैलाश्रयों के शैलचित्रों में कई पुरूष या स्त्रियां एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए नृत्य भाव में खड़ी प्रदर्शित हैं। उनके सामने नगाड़ा, ढपली और वासुरी जैसे वाद्यों का वादन हो रहा है। [vi] आबचंद में नृत्य एवं संगीत दृश्य मंदिर समूह के शैलाश्रय क्रमांक-३ में, रपटा घाट, ढबुआ घाट तथा गढ़वात घाट के शैलाश्रयों में चित्रित है। [vii]ऐसा प्रतीत होता है कि आदिम मानव जाति गीत संगीत तथा नृत्य से अपना मनोरंजन किया करती थी।

सागर क्षेत्र के चित्रित शैलाश्रयों में प्राचीन मानवों के युद्ध-पिपासु जीवन का भी प्रदर्शन हुआ है। आबचंद के शैलाश्रयों के युद्ध दृश्यों में युद्धरत योद्धाओं के एक हाथ में मूठदार तलवार तथा दूसरे हाथ में ढाल है। युद्ध के कुछ ऐसे भी दृश्य मिले हैं, जिनमें अश्वारोही सेना प्रमुख के सिर पर छत्र प्रदर्शित किया गया है। उनके आगे पीछे अन्य योद्धा हाथों में तलवार आदि आयुध लिए हुए पैदल जा रहे हैं। कुछ चित्रों में गजारोही, सेनापति, सरदार (श्रीमंतों) को प्रदर्शित किया गया है। युद्ध सम्बन्धी अधिकांश चित्र लाल-गेरुए रंग से रेखांकन शैली, क्षेपांकन शैली तथा पूरक शैली में चित्रित हैं।

आबचंद के ढबुआ घाट के शैलाश्रय में चित्रित एक दृश्य में एक मानव भैंसे को गले में रस्सी बांधकर ले जाते हुए प्रदर्शित किया गया है। [viii]इस दृश्यांकन से पशुपालन तथा पशुपालक समुदाय की जानकारी प्राप्त होती है। इससे उनके लोक संस्कृति के सामाजिक तथा आर्थिक पक्ष की जानकारी हो जाती है।

आबचंद क्षेत्र के अन्य शैलाश्रयों में गुहामानवों के पारिवारिक दृश्य तथा बहुसंख्य मानवाकृतियाँ चित्रित की गई हैं। प्राय: सभी शैलाश्रयों में लाल गेरूएँ, कत्थई, पीले, सफेद तथा हरे आदि खनिज रंगों से पूरक, अर्द्धपूरक, रेखांकन तथा ज्योमितिक आरेखन द्वारा चित्र बनाये गये हैं।

विषयवस्तु, कलागत शैलियों, रंग-संयोजन से ज्ञात होता है कि कत्थई रंग से निर्मित यष्टिमानव की आकृतियाँ मध्यपाषाणकाल की हैं। (ईसा पूर्व दस हजार से तीन हजार ईसा पूर्व) लाल, पीले रंग के साथ बाहरी सतह पर सफेद रंग तथा हरे रंग से निर्मित अर्द्ध पूरक शैली सहित रेखांकन द्वारा प्रदर्शित मानवाकृतियों को आद्येतिहासिक काल अथवा ताम्रपाषाणकाल (ईसा पूर्व दो हजार पांच सौ वर्ष से ईसा पूर्व एक हजार वर्ष) के कालक्रम में रखा जा सकता है।

आबचंद क्षेत्र के शैलाश्रयों में हुए लोक संस्कृति से सम्बन्धित चित्रणों में विविधता दिखायी देती है। आकार, प्रकार, शारीरिक संरचना, वर्ण्य विषय, भावाभिव्यक्ति में अधिक मौलिकता परिलक्षित होती है। सम्भवत: कलाकार भाव सम्प्रेषण तथा यथार्थपरक चित्रणों के प्रतिजागरूक थे।

ऐतिहासिककाल की लोक संस्कृति की चित्रण परम्परा में सुविकसित कला शैली वस्त्र विन्यास, अलंकरण, ढाल, तलवार लिए अश्वारोही योद्धा तथा मांगलिक प्रतीकों का अंकन हुआ है। इन शैलचित्रों के अध्ययन की विधाओं को सुनियोजित करने के लिए शैलाश्रयों के चित्रणों का वर्गीकरण, प्रमाणिक अभिलेख, चित्रों की निर्माण प्रक्रिया, कलात्मक विश्लेषण, रंग संयोजन का वैज्ञानिक, रासायनिक परीक्षण, तिथि निर्धारण के लिए सर्वमान्य आधार आदि विधाओं पर चिन्तन पर अपेक्षित है। ''क्योंकि ये आदिम शिलालेख हैं, ये शैलचित्र एक प्रकार से आदिम मानवों द्वारा लिखी हुई पुस्तकें भी हैं। जिनके द्वारा वह अपने अनुभवों को अपनी लोक संस्कृति की स्मृति को अपने आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए बचाकर रखना चाहते थे।''

आबचंद के शैलाश्रय अपनी प्राचीनता, विविधता, कलात्मकता के कारण पर्यटनीय महत्व रखते हैं। परन्तु प्रचार-प्रसार के अभाव के कारण पर्यटकों की दृष्टि से ओझल सा रहता है। यहाँ पर पर्यटकों के लिए आधारभूत सुविधाओं का अभाव है। आबचंद के मंदिर घाट तक सड़क निर्माण हो गया है, परन्तु अन्य शैलाश्रयों तक पर्यटकों को पहुँचाने के लिए मार्ग का निर्माण अभी तक नहीं किया गया है। इन शैलाश्रयों में अतिक्रमण एवं अनाधिकृत कब्जा करने के कारण इनमें चित्रित शैलचित्र क्षतिग्रस्त हो रहे हैं जिन पर प्रशासन द्वारा प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।

समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं एवं दूरदर्शन आदि विविध चैनलों पर आबचंद के महत्वपूर्ण शैलाश्रयों की जानकारियाँ प्रसारित की जायें। स्कूलों एवं कॉलेजों व विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के भ्रमण कराया जाये। यहाँ के शैलचित्रों व शैलाश्रयों की महत्वपूर्ण जानकारियों को देने वाली पुस्तिकाएँ व ब्रोशर जनसाधारण व पर्यटकों में रूचि रखने वालों को उपलब्ध कराया जाये।

आबचंद में पर्यटक की अपार सम्भानाएँ हैं। आबचंद के शैलाश्रय एवं विविध कालावधि के शैलचित्र भीमबैठका की भाँति ही ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। आबचंद क्षेत्र के शैलाश्रयों में लोक संस्कृति से संबंधित विविध पक्षों की प्रमाणिक जानकारी देने वाले सभी शैलचित्रों का संरक्षण होना अत्यावश्यक है।

मंदिर समूह क्रमांक १

मंदिर समूह क्रमांक २

मंदिर समूह क्रमांक ३

मंदिर समूह क्रमांक ४

मंदिर समूह क्रमांक ५

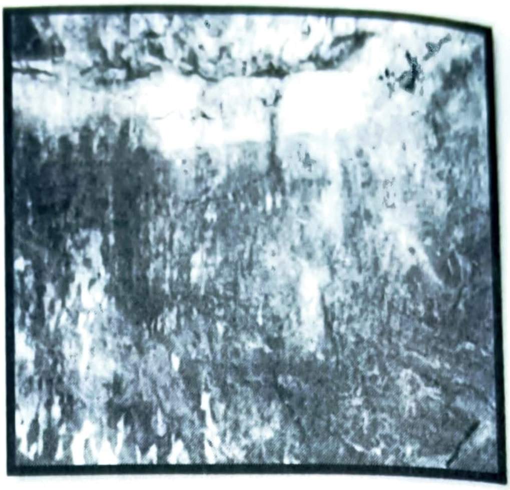

मंदिर समूह क्रमांक ६

भदभदासमूह

रपटा घाट

इमलीकरार

संदर्भ

१. सागर जिला गजेटियर, भोपाल म.प्र., १९७०, पृ.५०४
२. राघवन, पी., सागर विरासत और विकास, दिल्ली, १९९२, पृ.२२
३. बाजपेयी, के. डी., सागर थ्रू द ऐजेज, सागर, १९६४, पृ.०६
४. राघवन, पी., पूर्वोल्लिखित, पृ.२२
५. वही
६. मिश्र, मनीष, सागर जिले का सांस्कृतिक इतिहास, सागर, १९९८, पृ.२८
७. राघवन, पी., पूर्वोल्लिखित, पृ.२२
८. शुक्ल, प्रदीप, उत्तरी रायसेन क्षेत्र की शैलगृहीन चित्रकला का अध्ययन, शोध प्रबंध, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, १९९३, पृ.४१
९. दुबे, नागेश, 'सागर क्षेत्र के शैलाश्रयों में चित्रित मानव जीवन के विविध पक्ष', इण्डियन रॉक आर्ट, सेमिनार प्रोसीडिंग, नागपुर, २०००, पृ.८०
१०. बाजपेयी, के.डी.,पूर्वोल्लिखित, पृ.२२
११. वही
१२. वही
१३. तिवारी, चंद्रकिशोर, आबचंद के शैलगृह चित्रों का अध्ययन, अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, १९९८, पृ.५८-५९
१४. राघवन, पी., पूर्वोल्लिखित, पृ.२४
१५. बाजपेयी, के.डी., आबचंद के गह्वर-चित्र, मध्य भारती, अंक-२, १९५९, सागर विश्वविद्यालय, सागर, पृ.१
१६. बाजपेयी, के.डी.,पूर्वोल्लिखित, पृ.२
१७. राघवन, पी., पूर्वोल्लिखित, पृ.२२-२४
१८. वही, पृ.२६
१९. बाजपेयी, के.डी.,पूर्वोल्लिखित, पृ.२
२०. शुक्ल, प्रदीप, भारतीय शैलचित्र कला, सागर, २००१, पृ.११०

२१. दुबे, नागेश, 'सागर क्षेत्र के शैलाश्रयों में चित्रित मानव जीवन के विविध पक्ष', इण्डियन रॉक आर्ट, सेमिनार प्रोसीडिंग, नागपुर, २000, पृ.८१

२२. श्रीवास्तव, शिवकुमार, शैलाश्रयों के भित्तिचित्र : आदिम पाठ्य पुस्तकें, संवादहीनता के विरोध में रचनाधर्मिता, इलाहाबाद, १९९८, पृ.११७